Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले के विशेष संदर्भ वाले गैर-सरकारी संगठनों के कार्यपालकों के बीच नौकरी की संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

Anoop Dixit*

Research Student, Faculty of Rural Development and Business Management, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya University, Chitrakoot, Satna

सार - ***सभी संस्थानों की सफलता उनकी प्रबंधकीय व्यवस्था निर्भर करती है प्रबंध से तात्पर्य है उन संगठित व्यवस्थित तथा कमबद्ध क्रियाओं से है जिनके द्वारा भौतिक तथा मानवीय संसाधनों का उचित नियोजन संगठन समन्वय तथा नियंत्रण इस ढंग से किया जाय कि उद्देश्यों की प्राप्ति सर्वोत्तम रूप से सम्भव हो सके प्रबंधकीय व्यवस्था बिना वित्त के अधूरी होती है किसी भी व्यवसाय की सफलता के वित्त की पर्याप्त पूर्ति तथा वित्त के प्रभावपूर्ण प्रबन्धन पर निर्भर करती है वित्त के आभाव में अच्छी से अच्छी योजना से केवल कागजों पर ही लिखी रह जाती है वह क्रियान्वित नहीं हो पाती। इन प्रबन्ध के आधार पर किसी भी संचार में आय अर्थात् धन को स्त्रोत अलग-अलग होते हैं। एन.जी.ओ. के प्रबन्धन के आधार पर जिन संस्थाओं को सरकार द्वारा आय पर ही अपने वित्तीय संसाधनों की व्यवस्था करते है।***

----------X----------

एन.जी.ओ. में कार्यरत कर्मचारी के प्रभावशीलता पर आधारित होती है इस व्यवहार के परिपेक्ष्य में कर्मचारियों के प्रति अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रतिक्रियाएं प्रदर्शित की जाती है। इन कार्यरत कर्मचारियों में उनका तात्कालिक ज्ञान प्रेरित करने की योग्यता कौशल व्यवसाय से संबंधित ज्ञान प्रबंध योजना व्यवसाय से संबंधित ज्ञान समाज के अन्य सदस्यों के साथ आपसी मेल-मिलाप, स्वाभाव, संवेगात्मक रूप से स्थिर, सलाह व निर्देशन की योग्यता नैतिक रूप से कुशल तथा प्रभावशील व्यक्तित्व को समाहित किया जाता है। कार्यरत कर्मचारी की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती कि वह अपने व्यवसाय से किस सीमा तक संतुष्ट है। संतुष्ट कर्मचारी से ही अभिप्राय है तो वह अपनी योग्यताओं, निष्ठापूर्ण व्यवसाय से संबंधित परिस्थितियों व सुविधाओं को प्राप्त करने के कारण अपने कार्य संतुष्टि अनुभव करते हैं। एन.जी.ओ. में कार्यरत कर्मचारियों के प्रति उनकी संतुष्टि आतं रिक एवं बाह्य कारक कार्य से प्राप्त होने वाले स्वस्थ्य मनोरंजन के लिए नियुक्ति का स्थान कार्य की दशायें लोगों के बीच आपसी से हमेशा प्रजातांत्रिक गुण बुद्धि सामाजिक दायरा आय वेतन मात्र जीवन के गुण एवं राष्ट्र की अर्थव्यवस्था आदि से प्राप्त वित्तीय स्थिति से प्राप्त होने वाली संतुष्टि को प्रभावित करने की कार्य संतुष्टि अप्रत्यक्ष रूप से उनके व्यवसायिक कार्य को प्रभावित करता है।

समस्या कथन-

मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले के विशेष संदर्भ वाले गैर-सरकारी संगठनों के कार्य पालकों के बीच नौकरी की संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

एन.जी.ओ. की परिभाषा- गैर सरकारी संगठन या Non-Government Organization Mission के तहत चलाये जाते है समाज की सामाजिक समस्याओं का हल करने के लिए और विभिन्न क्षेत्रों में विकास की गतिविधियों को बल देना एजेन्सियों का प्रमुख उद्देश्य है। कार्य क्षेत्र के रूप में कृषि, पर्यावरण, शिक्षा, संस्कृति मानव अधिकार, स्वास्थ्य, महिला समस्या, बाल विकास आदि इनमें से कोई भी क्षेत्र चुना जा सकता है यह एक ऐसा क्षेत्र है, जहां आप समाज के लिए कार्य करते हैं।

www.ignited.in

कार्य संतुष्टि की परिभाषा-

ग्यूजन 1958 के अनुसार- "जीवन संतोष का आशय उस सीमा से है जहां तक किसी व्यक्ति की आवश्यकताओं की संतुष्टि होती है और उस सीमा तक व्यक्ति संतोष प्राप्त करता है जो उसकी कार्य परिस्थितियों के रूप में प्रतिबन्धित हो"।

कार्य संतुष्टि एक सफल शैक्षिक अधिगम प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण आपेक्षित तत्व कार्य संतुष्टि एक अत्यंत जटिल तथ्य साबित होती है।

संतोष मुख्यतः दो प्रकार का होता है-

1. मनोवैज्ञानिक संतुष्टि
2. सामाजिक संतुष्टि

उद्देश्य-

1. एन.जी.ओ. में कार्यरत पुरूष व कर्मचारियों एवं महिला कर्मचारियों के कार्य सतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. एन.जी.ओ. में कार्यरत शहरी पुरूष कर्मचारियों एवं ग्रामीण पुरूष कर्मचारियों के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. एन.जी.ओ. में कार्यरत शहरी महिला कर्मचारियों एवं ग्रामीण महिला कर्मचारियों के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना-

(1) एन.जी.ओ. में कार्यरत पुरुष कर्मचारियों एवं महिला कर्मचारियों के कार्य संतुष्टि के स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।

(2) एन.जी.ओ. में कार्यरत शहरी पुरुष कर्मचारियों एवं ग्रामीण पुरुष कर्मचारियों के कार्य संतुष्टि के स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।

(3) एन.जी.ओ. में कार्यरत शहरी महिला कर्मचारियों एवं ग्रामीण महिला कर्मचारियों के कार्य संतुष्टि के स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।

सीमा-

प्रस्तुत शोध कार्य छतरपुर जिले में गैर सरकारी संगठनों के कार्यपालकों के कार्य में कार्यरत 600 महिला एवं पुरुषों तक सीमित है।

अनुसंधान विधि- अनुसंधात्मक प्रदत्तों को एकत्रित करने के लिए सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है। न्यादर्श हेतु छतरपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी कार्यरत 600 कर्मचारियों को यादृच्छिक विधि से चुना गया है।

अध्ययन का उपकरण-

डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि मापनी का उपयोग किया गया।

प्रदत्तों का सांख्यकीय विश्लेषण-

परिकल्पनाओं और प्रदत्तों की विष्वसनीयता के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा "टी" क्रान्तिक परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तालिका क्रमांक 01

एन.जी.ओ. में कार्यरत पुरुष कर्मचारी एवं महिला कर्मचारियों के कार्य संतुष्टि की तुलना

N=600

क्र.	श्रेणी	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
						0.05	0.01
1.	समग्र कार्यरत पुरुष कर्मचारी	300	25.41	9.45	2.84	सार्थक अन्तर है	सार्थक अन्तर है
2.	समग्र कार्यरत महिला कर्मचारी	300	23.31	8.66		सार्थक अन्तर है	सार्थक अन्तर है
	Df	598				1.97	2.59

कार्य संतुष्टि पर पुरुष कर्मचारियों का मध्यमान (25.41) एवं महिला कर्मचारियों का मध्यमान (23.31) है। 0.5 एवं 0.1 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर है।

अतः पुरुष कर्मचारियों का कार्य संतुष्टि का स्तर महिला कर्मचारियों से उच्च है।

अतः परिकल्पना अमान्य की जाती है।

www.ignited.in

तालिका क्रमांक 02

एन.जी.ओ. में कार्यरत शहरी पुरुष कर्मचारी एवं ग्रामीण पुरुष कर्मचारियों के कार्य संतुष्टि की तुलना

N=300

क्र.	श्रेणी	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
						0.05	0.01
1.	शहरी पुरुष कर्मचारी	150	24.25	8.66	1.08	सार्थक अन्तर नहीं है	सार्थक अन्तर नहीं है
2.	ग्रामीण पुरुष कर्मचारी	150	23.20	8.21		सार्थक अन्तर नहीं है	सार्थक अन्तर नहीं है
	Df	298				1.97	2.59

तालिका क्रमांक 02 में शहरी पुरुष कर्मचारी एवं ग्रामीण पुरुष कर्मचारियों की कार्य संतुष्टि की तुलना को दर्शाया गया है।

कार्य संतुष्टि पर शहरी पुरुष कर्मचारियों का मध्यमान (24.25) एवं ग्रामीण पुरुष कर्मचारियों का मध्यमान (23.20) है। 0.5 एवं 0.01 स्तर पर "टी" मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है।

अतः शहरी पुरुष कर्मचारियों एवं ग्रामीण पुरुष कर्मचारियों का कार्य संतुष्टि का स्तर समान है।

अतः शून्य परिकल्पना मान्य की जाती है।

तालिका क्रमांक 03

एन.जी.ओ. में कार्यरत शहरी महिला कर्मचारी एवं ग्रामीण महिला कर्मचारियों के कार्य संतुष्टि की तुलना

N=300

क्र.	श्रेणी	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
						0.05	0.01
1.	शहरी महिला कर्मचारी	150	25.32	9.98	1.16	सार्थक अन्तर नहीं है	सार्थक अन्तर नहीं है
2.	ग्रामीण महिला कर्मचारी	150	24.04	9.11		सार्थक अन्तर नहीं है	सार्थक अन्तर नहीं है
	Df	298				1.97	2.59

तालिका क्रमांक 03 में एन.जी.ओ. में कार्यरत शहरी महिला कर्मचारी एवं ग्रामीण महिला कर्मचारियों की कार्य संतुष्टि की तुलना को दर्शाया गया है।

कार्य संतुष्टि पर शहरी महिला कर्मचारियों का मध्यमान (25.32) एवं ग्रामीण महिला कर्मचारियों का मध्यमान (24.04) है। 0.5 एवं 0.01 स्तर पर "टी" मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है।

अतः शहरी महिला कर्मचारियों एवं ग्रामीण महिला कर्मचारियों का कार्य संतुष्टि स्तर समान है।

अतः परिकल्पना मान्य की जाती है।

निष्कर्ष-

(1) एन.जी.ओ. में कार्यरत शहरी पुरुष कर्मचारी एवं ग्रामीण पुरुष कर्मचारियों की कार्य संतुष्टि के कार्य पर अंतर नहीं पाया गया। अर्थात् शहरी पुरुष कर्मचारियों एवं ग्रामीण पुरुष कर्मचारियों की कार्य संतुष्टि पर समानता है।

(2) एन.जी.ओ. में कार्यरत शहरी महिला कर्मचारी एवं ग्रामीण महिला कर्मचारियों की कार्य संतुष्टि पर अंतुर नहीं पाया गया। अर्थात् शहरी महिला कर्मचारियों की कार्य संतुष्टि पर समानता है।

अर्थात् कार्य संतुष्टि पर महिला एवं पुरुष कर्मचारियों में कार्य संतुष्टि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

सुझाव-

(1) कार्य संतुष्टि हेतु समय-समय पर कर्मचारियों के वेतन मंहगाई भत्ता, चिकित्सा राशि भी बढ़ती रहना चाहिए ताकि कार्यरत कर्मचारियों को उनके व्यवसाय से संतुष्टि मिल सके तथा उनकी अपने कार्य में रूचि बनी रहे।

(2) शहरी कर्मचारियों एवं ग्रामीण कर्मचारियों को समान वेतन भत्ता एवं अन्य सुविधाओं का लाभ मिले।

(3) कर्मचारियों को अपने कार्य करने में स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

(4) पुरुष कर्मचारियों एवं महिला कर्मचारियों को समान सुविधाएं की व्यवस्था होनी चाहिए।

संदर्भ-

1. कपिल, एच.के. (2007): अनुसंधान विधियाँ, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

2. बेस्ट जे.डब्ल्यू. (1978): रिसर्च एन एजुकेशन, नई दिल्ली, प्रेन्टिस हाल आफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पृ. 264-268

3. गैरेट एच.ई. (1985): स्टेटिस्टिक्स इन फिजियोलॉजी एवं एजूकेशन बम्बई: वकील्स फीफर एण्ड सिमान लि.

4. यतीन्द्र ठाकुर (2017): समावेशी शिक्षा- अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृ. 72-73.

Corresponding Author

Anoop Dixit*

Research Student, Faculty of Rural Development and Business Management, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya University, Chitrakoot, Satna